SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 2nd year SESSION – 2020 - 2022

SUBJECT - Assessment for learning

TOPIC NAME – Assessment of learning [Concept of Evaluation]

14-01-2022

मूल्यांकन का प्रत्यय [Concept of Evaluation]

- मूल्यांकन की प्रक्रिया मापन की अपेक्षा अधिक व्यापक होती है।
- मूल्यांकन शब्द का शाब्दिक अर्थ मूल्य का अंकन करना है। यानि मूल्यांकन मूल्य निर्धारण की एक प्रक्रिया है।
- मूल्यांकन के अन्तर्गत गुणों, विशेषताओं की वांछनीयता पर दृष्टिपात किया जाता है। अत: मापन वास्तव में मुल्यांकन का एक अंग मात्र है।
- मापन में किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के गुणों अथवा विशेषताओं का वर्णन मात्र ही किया जाता है।
- मुल्यांकन एक ऐसा कार्य अथवा प्रक्रिया है जिसमें मापन से प्राप्त परिणामों की वांछनीयता (Desirability) का निर्णय किया जाता है।
- मापन वास्तव में स्थिति निर्धारण है जबकि मूल्यांकन उस स्थिति की वांछनीयता का सूचक होता है।
- मापन किसी गुण अथवा विशेषता का गुणात्मक अथवा मात्रात्मक वर्णन है, जबकि मूल्य निर्धारण उस गुणात्मक अथवा मात्रात्मक वर्णन की गुणवत्ता (Quality) का निर्धारण है।
- किसी गुण अथवा विशेषता की कितनी मात्रा व्यक्ति में उपलब्ध है इस प्रश्न का उत्तर मापन से प्राप्त होता है।
- जबकि उस व्यक्ति में उपस्थित गुण अथवा विशेषता की मात्रा किसी उद्देश्य की दृष्टि से कितनी संतोषप्रद (How satisfactory) अथवा कितनी वांछनीय (How Desirable) है इस प्रश्न का उत्तर मुल्यांकन से निर्धारित होता है।
- मापन का उदाहरण – छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को अंको में व्यक्त करना मापन का उदाहरण है।
- मुल्यांकन का उदाहरण – छात्रों के प्राप्तांको के आधार पर उनकी उपलब्धि के स्तर के सम्बन्ध में संतोषजनक अथवा असंतोषजनक स्थिति का निर्धारण करना मुल्यांकन का उदाहरण है
- निःसंदेह मापन मूल्यांकन में सहायक अवश्य है परन्तु मुल्यांकन का समानार्थी नहीं है।
- प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री नार्मन ई ग्रोनलुंड के अनुसार — "मुल्यांकन को छात्रों के द्वारा प्राप्त किये गये शिक्षा उद्देश्यों की सीमा को ज्ञात करने की क्रमबद्ध प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। मुल्यांकन के अंतर्गत छात्रों के व्यवहार के गुणात्मक व मात्रात्मक वर्णन के साथ-साथ व्यवहार की वांछनीयता से सम्बन्धित मूल्य निर्धारण भी निहित रहता है।"
- उदाहरण- वास्तव में कोई भी अध्यापक/प्राध्यापक अपने शिक्षण कार्य के उपरान्त यह जानना चाहता है कि क्या उसने वे उद्देश्य का प्राप्त कर लिये हैं जिसके लिए उसने अध्यापन कार्य कर रहे हैं तथा प्रधानाचार्य यह जानना चाहता है कि क्या उसके विद्यालय के छात्रों के द्वारा वांछित शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की जा रही है ये सभी प्रश्न मुल्यांकन की तरफ संकेत करते हैं।

- NCERT [National Concil of Educational Research and Training - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद] ने मुल्यांकन के प्रत्यय को स्पष्ट करते हुए कहा है कि — यह एक ऐसी सतत् व व्यवस्थित प्रक्रिया है जो देखती है (शिक्षा)
  - (i) निश्चित शैक्षिक उद्देश्यो (specified Educational objectives) की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है।
  - (ii) कक्षा में दिये गये अधिगम अनुभव [Learning Experiences] कितने प्रभावशाली रहे हैं, तथा
  - (iii) शिक्षा के लक्ष्य (Goals of education) कितने ढंग से पूर्ण हो रहे हैं।
- मापन की तरह मूल्यांकन भी व्यक्तियों अथवा वस्तुओ के ~~किसी~~ गुण या किन्ही गुण विशेष के सन्दर्भ में किया जा सकता है।
- परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में साधारणतः मुल्यांकन से अभिप्रायः छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में किये मुल्यांकन से लगाया जाता है।
- मुल्यांकन प्रक्रिया में प्रायः किसी प्रयास या कार्यक्रम के द्वारा प्राप्त उद्देश्यों अथवा उपलब्धियों की किये गये प्रयासों से वांछित उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया जा चुका है।
- मूल्यांकन का यह नवीन प्रत्यय इस मूलभूत मान्यता पर आधारित कि शिक्षा संस्था संस्था का कार्य छात्रों को सीखने में सहायता करना है।
- सीखने के दौरान छात्रों के व्यवहार में जिन परिवर्तनो को लाने के हम इच्छुक होते हैं उन्हें शिक्षा उद्देश्यों अथवा अनुदेशन उद्देश्यों (Instructional objectives) के नाम से पूकारा जाता है।
- ये अधिगम क्रियायें निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में किस सीमा तक सफल रही हैं यह देखना मूल्यांकन प्रक्रिया का कार्य है।
- स्पष्ट है कि मुल्यांकन प्रक्रिया में शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की वांछनीयता को देखा जाता है।
- इस प्रकार से मुल्यांकन प्रक्रिया के 3 प्रमुख अंग
  1. शिक्षण उद्देश्य [Educational objectives]
  2. अधिगम क्रियायें [Learning Activities]
  3. व्यवहार परिवर्तन [Behavioural changes]

NOTE - मुल्यांकन ~~की प्रक्रिया~~ के तीनो अंग परस्पर एक दुसरे से सम्बन्धित तथा एक दुसरे पर निर्भर रहते हैं।

1. शिक्षण उद्देश्य (Educational objectives) — इसकी प्राप्ति के लिए विद्यालय में अधिगम क्रियायें आयोजित की जाती है। जिनसे छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन होते हैं।

छात्रों के व्यवहार में आये इन परिवर्तनों की तुलना वांछित परिवर्तन अर्थात् (शिक्षा उद्देश्यों) से करके मूल्यांकन किया जाता है।

ii) अधिगम क्रियाएँ (Learning Activities) — सीखना / अधिगम एक व्यापक सतत एवं जीवन पर्यन्त चलनेवाली महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

iii) व्यवहार परिवर्तन (Behavioural changes) —

6. सहयोग से रहना सिखाना, 7. संवेगों को प्रशिक्षित करना
7. क्रियाशीलता का महत्व
1. बालकों को उनके जीवन से संबंधित उपयोगी ज्ञान प्रदान करना
2. बालक में मानसिक शक्तियों का विकास करना
3. सीखने के लिए प्रेरित करना
4. बालकों के कठिनाइयों दूर करना
5. बालकों का मार्गदर्शन करना, 6. बालकों का आत्मविश्वास उत्पन्न

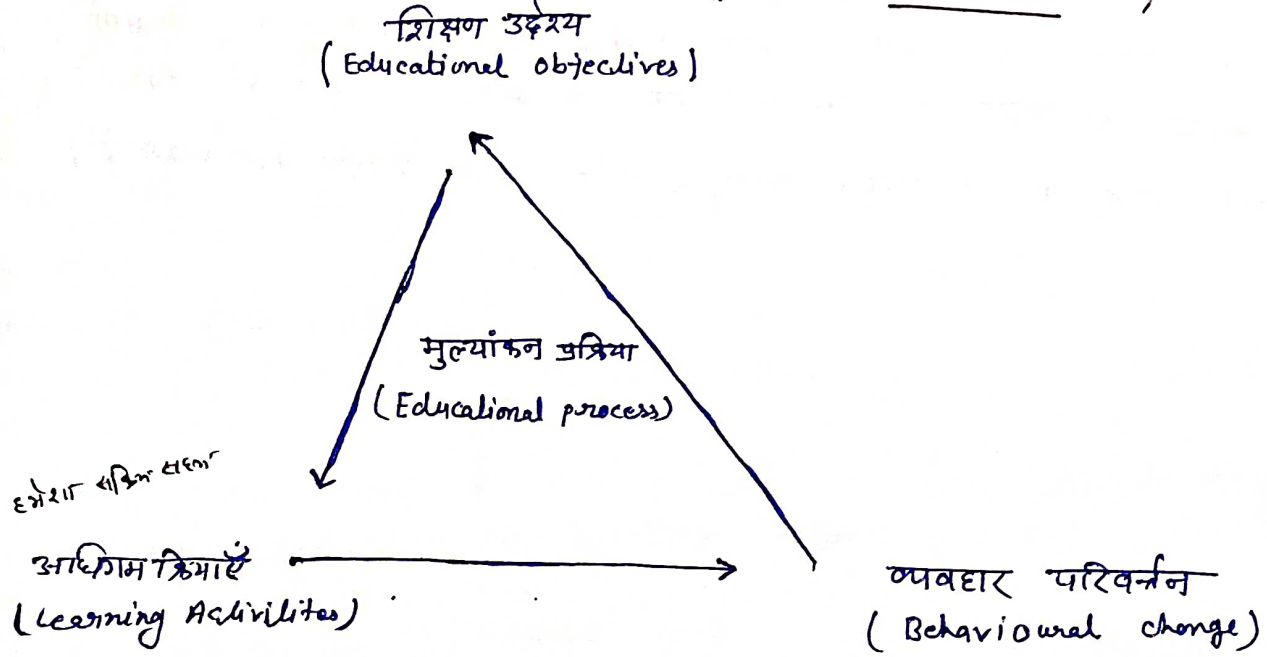

मूल्यांकन का प्रत्यय
(Concept of Evaluation)

मूल्यांकन

- शिक्षा - क्षेत्र में शिक्षार्थी की विभिन्न योग्यताओं के परीक्षण या जाँच के लि... कई शब्दों का प्रचलन है जैसे - i. परीक्षा
  ii. परीक्षण
  iii. मापन
  iv. मूल्यांकन

1. परीक्षा — • परीक्षा किसी पदार्थ में अभीष्ट गुण होने या न होने को जानने की प्रक्रिया है।
   - शिक्षण के क्षेत्र में व्यवहारगत परिवर्तन का पता लगाने के लिए किसी प्रश्न/प्रश्नपत्र के माध्यम से समस्या का प्रस्तुतीकरण किया जाता है।
   - तथा परीक्षार्थी के उत्तर/उत्तरों से उसमें हुए व्यवहारगत परिवर्तन की मात्रा का पता लगाया जाता है।

2. परीक्षण — • परीक्षण व्यवहार के प्रतिदर्श वस्तुनिष्ठ तथा मानकीकृत मापन है।
   - वास्तव में परीक्षण परीक्षा का वह रूप है जो किसी समूह से संबंधित व्यक्ति विशेष की बुद्धि, उसके व्यक्तित्व, उसकी अभिक्षमता तथा उपलब्धि को व्यक्त करता है।

3. मापन — • मापन किसी पदार्थ/व्यक्ति में विद्यमान गुणों/लक्षणों/विशेषताओं की मात्रा या परिमाणात्मक (परिमाण) जानने की प्रक्रिया है।
   - किसी पदार्थ के संख्यात्मक तथ्य/तत्व का कथन मापन कहा जाता है।